# श्री हनुमान चालीसा

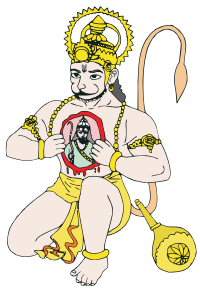

श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुर सुधारि ।
वरनउं रघुवर विमल जसु, जो दायकु फल चारि ॥
बुद्धिहीन तनु जानिकै, सुमिरौ पवन कुमार ।
बल बुद्धि विद्या देहु मोहिं, हरहु कलेश विकार ॥

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर ।
राम दूत अतुलित बल धामा, अंजनि पुत्र पवन-सुत नामा ।
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ।
कंचन वरन विराज सुबेसा, कानन कुंडल कुंचित केसा ।
हाथ वज्र और ध्वजा विराजे, कांधे मूंज जनेऊ साजै ।
शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग बंदन ।
विद्यावान गुणी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ।
सुक्ष्म रुप धरि सियहिं दिखाया, विकट रुप धरि लंक जरावा ।
भीम रुप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुबीर हरषि उर लाये ।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।
सहस बदन तुम्हरो गावैं, अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद सारद सहित अहिसा ।
यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते, कबि कोविद कहि सके कहाँ ते ।
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राज पद दीन्हा ।
तुम्हारे मन्त्र विभीषण माना, लंकेश्वर भए सब जग जाना ।
युग सहस्त्र जोजन पर भानु, लील्यो ताहि मधुर फल जानु ।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं, जलधि लांघ गये अचरज नाहीं ।
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते ॥

राम दुआरे तुम रखवारे, होत ना आज्ञा बिनु पैठारे ।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना ।
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हाँक तें कांपै ।
भूत पिशाच निकट नहि आवै, महावीर जब नाम सुनावै ।
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ।
संकट तें हनुमान छुडावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा ।
औज मनोरथ जो कोई लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ।
चारों जुग प्रताप तुम्हरा, है प्रसिद्ध जगत उजियारा ।
साधु संत के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ।
राम रसायन तुम्हारे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ।
तुम्हरे भजन राम को भावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ।
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहाँ जन्म हरि-भक्ति कहाई ।
और देवता चित्त न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ।
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।
जै जै जै हनुमान गोसाई, कृपा करहु गुरु देव कि नाई ।
जो सत बार पाठ करे कोई, छुटहि बंदि महा सुख होई ।
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखि गोरीसा ।
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मंह डेरा ॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रुप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।

Composed in TEX for देवनागरी at Scientific Documentations (www.scidocs.net)